Education is a tripolar process. Three of its organs are teacher, student and curriculum. The process of education cannot be run in the absence of curriculum. It is the nerve centre of the entire educational process.

The form of education and teaching is decided by curriculum. To understand this term, we will have to pay attention to its three meaning:

Etymological Meaning of Curriculum

The term 'curriculum' has originated from the Latin word 'currere' meaning race course. In its etymological sense, we can say that it is the course which a person has to run across to arrive at the destination (गन्तव्य).

From this view point, education becomes a race which is run of the course of curriculum and by which the aim of personality development of a child is achieved.

Narrow Meaning of Curriculum

In its narrow sense, the term "curriculum" is considered synonyms of "course of study" or syllabus which limits the facts of some subject. Thus, in its narrow sense, curriculum is limited to only bookish knowledge. There is no place in it for a child's needs, interests, attitudes, aptitude, abilities and activities pertaining to practical life. In brief – we can say that in its narrow sense, by curriculum is meant that course in which only bookish knowledge is provided to students.

Meaning and Definition of Curriculum

According To Munrae

"Curriculum embodies all the experiences which are utilized by the school to attain the aims of education"

According To Bent and Kronenberg.

Curriculum is the systematic from of contents of studies which is prepared for meeting the needs of students

all the subject that are taught in a school, college or university; the contents of a particular course of study

विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय को पढ़ाये जाने वाले समस्त विषय; पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम; पाठ्यक्रम विवरणिका, पाठ्य विवरण –

Definition of Curriculum.

पाठ्यक्रम अंग्रेजी शब्द curriculum के लैटिन भाषा के "Currere" से उत्पन्न हुआ है। जिसका अर्थ है "दौड़ का मैदान" (Race Course)

Horne हार्न ने शिक्षा प्रक्रिया के चार प्रमुख अंगों विद्यार्थी, पाठ्यक्रम, वातावरण तथा शिक्षक का उल्लेख करते हुए बताया कि यदि पाठ्यक्रम शैक्षिक दौड़ का मैदान है तो विद्यार्थी पाठ्यक्रम रूपी मैदान के अनुसार दौड़ने वाला धावक, वातावरण वह दर्शक है जो उसे दौड़ने को प्रेरित करता है तथा शिक्षक पथ प्रदर्शक है।

According To Munero

"पाठ्यक्रम में वे समस्त अनुभव निहित हैं जिनको विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उपयोग में लाया जाता है।"

"Curriculum embodies all the experiences which are utilized by the school to attain the aims of education"

पेन के अनुसार - "पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वे सभी परिस्थितियां आती हैं जिनका प्रत्यक्ष संगठन और चयन बालकों के व्यक्तित्व में विकास लाने तथा व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु विद्यालय करता है।"

"The Course covers all the situations whose direct organization and selection the school undertakes to bring about development in the personality of children and change in behaviour."

कनिंघम के अनुसार - पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक साधन है जिससे वह अपने पदार्थ (शिक्षार्थी) को अपने आदर्श (उद्देश्य) के अनुसार अपने कक्षाकक्ष (स्कूल) में ढाल सके।

शिक्षाशास्त्रियों ने पाठ्यचर्या को अनेक प्रकार से परिभाषित किया है।
कुछ प्रमुख परिभाषायें —

केनिंघम (Cunninghom) ⇒

"कलाकार (शिक्षक) के हाथ में यह (पाठ्यचर्या) एक साधन है जिससे वह पदार्थ (विद्यार्थी/शिक्षार्थी) को अपने आदर्श (उद्देश्य) के अनुसार अपने स्टुडियो (स्कूल) में ढाल सके।

According To Froebel —

" पाठ्यचर्या को मानव जाति के सम्पूर्ण ज्ञान तथा अनुभवों का सार समझना चाहिये।"

Curriculum should be conceived as an epitome of the whole of the knowledge and experience of the human race"

According To Munroe.

" पाठ्यचर्या में वे सभी क्रियायें सम्मिलित है जिनका हम शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विद्यालय में उपयोग करते है

"Curriculum includes all those activities which are utilised by the school to attain the aims of education"

By Munroe

According to Horne-

"पाठ्यचर्या वह है जो बालकों को पढ़ाया जाता है। यह शान्तिपूर्ण पढ़ने या सीखने से अधिक है। इसमें उद्योग, व्यवसाय, ज्ञानोपार्जन, अभ्यास और क्रियाएँ सम्मिलित हैं।"

पाठ्यचर्या की प्रकृति
Nature of Curriculum

पाठ्यचर्या की प्रकृति को जानने के लिए हमें शिक्षा के विकास अध्ययन करना होगा। प्राचीन काल में शिक्षा की प्रकृति पूर्णतया अनौपचारिक थी। उस समय बालकों की शिक्षा परिवार एवं समाज के मध्य होती थी। शिक्षा किसी भी क्रम में बंधी नहीं थी। बालक परिवार एवं समाज के बीच सहभागी बनकर प्रत्यक्ष अनुभव व निरीक्षण द्वारा शिक्षा प्राप्त करता था। लेकिन सभ्यता के विकास के साथ-साथ मानव के ज्ञान में वृद्धि होती गयी।

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्य-विषयों में अन्तर

पाठ्यचर्या के अर्थ और परिभाषा से स्पष्ट होता है कि इसकी संकल्पना इतनी व्यापक, बृहद है कि विद्यार्थियों के सीमित दायरे और औपचारिक कार्य-प्रणाली में बांधना कठिन है। इस कारण से शिक्षा संस्थाओं में प्रायः पाठ्यचर्या शब्द का प्रयोग सीमित अर्थ में किया जाता है।

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम से व्यापक तथा बड़ा है। पाठ्यक्रम पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण भाग होता है। पाठ्यचर्या में पाठ्यक्रम के अलावा अन्य क्रियायें व्यवहार, आदतें तथा भावनाएं सम्मिलित होती हैं। किसी कक्षा में पढ़ाये जाने वाले विविध विषय, प्रयोगशाला व्यवहारिक अनुभव, पाठ्येतर क्रियायें, सामाजिक सांस्कृतिक कार्यक्रम, नैतिक व मूल्यपरक शिक्षा आदि पाठ्यचर्या बनाते हैं।

पाठ्यक्रम मुख्यतः शिक्षार्थियों के ज्ञानात्मक पहलू से ही सम्बन्धित होता है।

Scanned with CamScanner

पाठ्यचर्या का महत्व
Importance of Curriculum

शिक्षा की प्रक्रिया में पाठ्यचर्या का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का माध्यम होता है। यदि शिक्षा के उद्देश्य उसे मूल्यपूर्ण बनाते है तो पाठ्यचर्या उन लक्ष्यों को प्राप्त करने का साधन बनता है। निम्न लिखित तथ्य शिक्षा में पाठ्यचर्या के महत्व पर प्रकाश डालते है।

(1) पाठ्यचर्या शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार —

शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है जिसके तीन आधार है शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यचर्या। यद्यपि आधुनिक युग में शिक्षा का प्रमुख आधार शिक्षार्थी माना जाता था। लेकिन अभी भी पाठ्यचर्या के आधार की उपेक्षा नही की जा सकती है। यह वह कड़ी है जो शिक्षक और शिक्षार्थी को जोड़ती है।

ब्रिग्स महोदय के अनुसार :

"शिक्षा में आधारभूत समस्या पाठ्यचर्या की है।"